International Journal of Emerging Research in Arts, Science and Technology
Volume 1 | Issue 4 | July 2026 | ISSN: 3139-5252 (Online)
Available online at: https://ijerast.com/
DOI: https://doi.org/10.67715/ijerast.v1i4.21

जेनरेशन-बीटा : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

डॉ. अखिलेश सिंह

असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, राणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुल्तानपुर, (उत्तर प्रदेश), भारत

Email: socio.rppg@gmail.com

Received: 07 July 2026 | **Accepted:** 19 July 2026 | **Published:** 30 July 2026

Abstract (सार)

यह शोधपत्र जेनरेशन-बीटा (McCrindle, 2025 के अनुसार 2025 से 2039 के बीच जन्म लेने वाली पीढ़ी) की सामाजिक, सांस्कृतिक और तकनीकी विशेषताओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करता है। यह पीढ़ी ऐसे समय में जन्म ले रही है, जब कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), इंटरनेट, स्मार्ट उपकरण और डिजिटल तकनीक जीवन का सामान्य हिस्सा बन चुके हैं। इसलिए इस पीढ़ी का विकास और समाजीकरण पहले की सभी पीढ़ियों से भिन्न होगा।

चूँकि जेनरेशन-बीटा अभी अपने प्रारंभिक बचपन में है, इसलिए इस अध्ययन का आधार लेखक द्वारा अपने एक वर्षीय पौत्र का प्रत्यक्ष अवलोकन है। इसके साथ-साथ वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों, तकनीकी विकास तथा पारिवारिक अनुभवों का भी विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जेनरेशन-बीटा का समाजीकरण जन्म से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक के वातावरण में हो रहा है। यदि परिवार, विद्यालय और समाज मिलकर तकनीक तथा मानवीय मूल्यों के बीच संतुलन बनाए रखें, तो यह पीढ़ी भविष्य में तकनीकी रूप से सक्षम होने के साथ-साथ सामाजिक रूप से भी जिम्मेदार नागरिक बन सकती है।

मुख्य-शब्द (Keywords): *जेनरेशन-बीटा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, समाजीकरण, एआई नेटिव, डिजिटल तकनीक*

1. प्रस्तावना

समाज एक गतिशील व्यवस्था है। समय के साथ समाज बदलता है और उसके साथ लोगों की सोच, जीवनशैली, शिक्षा, रोजगार तथा पारिवारिक संबंधों में भी परिवर्तन आता है। प्रत्येक नई पीढ़ी अपने समय की परिस्थितियों के अनुसार विकसित होती है। इसी कारण समाजशास्त्र में विभिन्न पीढ़ियों का अध्ययन महत्वपूर्ण माना जाता है।

वर्तमान समय में विश्व एक नई पीढ़ी के आगमन का साक्षी बन रहा है, जिसे जेनरेशन-बीटा कहा जा रहा है। ऑस्ट्रेलियाई जनसांख्यिकीविद् मार्क मैककिंडल द्वारा प्रस्तावित इस नामकरण के अनुसार सामान्यतः वर्ष 2025 से 2039 के बीच जन्म लेने वाले बच्चों को इस पीढ़ी में शामिल किया जाता है (McCrindle, 2025)। यह पहली ऐसी पीढ़ी होगी, जिसके लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, स्मार्ट मशीनें, इंटरनेट, क्लाउड तकनीक, वॉयस असिस्टेंट और स्वचालित प्रणालियाँ जन्म से ही सामान्य जीवन का हिस्सा होंगी।

पहले की पीढ़ियों ने तकनीक को धीरे-धीरे अपनाया। किसी ने रेडियो देखा, किसी ने टेलीविजन, किसी ने कंप्यूटर और इंटरनेट सीखा। लेकिन जेनरेशन-बीटा को यह सब सीखना नहीं पड़ेगा, क्योंकि यह सब उसके जन्म के समय से ही उसके आसपास उपलब्ध होगा। यही कारण है कि इस पीढ़ी का समाजीकरण पहले की सभी पीढ़ियों से अलग होगा। कार्ल मैनहाइम के प्रसिद्ध पीढ़ी-सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक पीढ़ी अपने प्रारंभिक जीवन-काल की सामाजिक-ऐतिहासिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित होती है, और इसी साझा अनुभव के आधार पर एक विशिष्ट "पीढ़ीगत चेतना" का निर्माण होता है (Mannheim, 1928/1952)।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह अध्ययन इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि आने वाले वर्षों में यही पीढ़ी शिक्षा, रोजगार, विज्ञान, अर्थव्यवस्था तथा सामाजिक जीवन की दिशा निर्धारित करेगी।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJERAST Published by Cognitive Helix Publishing.

2. अध्ययन का उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- जेनरेशन-बीटा की सामाजिक एवं तकनीकी पृष्ठभूमि को समझना।
- इस पीढ़ी के प्रारंभिक समाजीकरण का अध्ययन करना।
- पूर्ववर्ती पीढ़ियों की तुलना में इसके प्रमुख परिवर्तनों का विश्लेषण करना।
- परिवार और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की भूमिका को समझना।
- भविष्य की संभावनाओं तथा चुनौतियों की पहचान करना।

3. अध्ययन की विधि

यह शोध मुख्यतः गुणात्मक (Qualitative) अध्ययन है। चूँकि जेनरेशन-बीटा अभी प्रारंभिक अवस्था में है, इसलिए इस विषय पर व्यापक सर्वेक्षण उपलब्ध नहीं हैं। इसी कारण इस अध्ययन में प्रत्यक्ष अवलोकन (Observation Method) को आधार बनाया गया है।

लेखक ने अपने एक वर्षीय पौत्र के दैनिक व्यवहार का निरंतर अवलोकन किया है। इसके अतिरिक्त परिवार के तकनीकी वातावरण, वर्तमान सामाजिक परिवर्तनों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रभाव का अध्ययन करके निष्कर्ष प्रस्तुत किए गए हैं।

यह अध्ययन केवल सैद्धांतिक नहीं है, बल्कि लेखक के व्यक्तिगत अनुभवों तथा प्रत्यक्ष अवलोकनों पर आधारित एक समाजशास्त्रीय केस अध्ययन (Case Study) भी है। इसलिए इसमें प्रस्तुत निष्कर्ष वर्तमान परिस्थितियों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. सामाजिक एवं तकनीकी पृष्ठभूमि

वर्तमान समय में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) मानव जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, बैंकिंग, परिवहन, उद्योग, कृषि, मनोरंजन और संचार जैसे क्षेत्रों में एआई का उपयोग तेजी से बढ़ रहा है। स्मार्टफोन, स्मार्ट टीवी, स्मार्ट स्पीकर, क्लाउड कंप्यूटिंग तथा इंटरनेट अब सामान्य जीवन का हिस्सा बन चुके हैं।

मार्क प्रेंस्की ने "डिजिटल नेटिव" (Digital Native) की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया था कि जो पीढ़ी डिजिटल तकनीक के बीच जन्मी और पली-बढ़ी, वह सूचना को अपने पूर्ववर्तियों से मौलिक रूप से भिन्न ढंग से ग्रहण और संसाधित करती है (Prensky, 2001)। जेनरेशन-ज़ेड को इसी अर्थ में "डिजिटल नेटिव" कहा गया, क्योंकि उसने इंटरनेट और स्मार्टफोन के साथ अपना बचपन बिताया। इसके विपरीत जेनरेशन-बीटा को "एआई नेटिव" कहा जा सकता है, क्योंकि यह पीढ़ी जन्म से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित वातावरण में रह रही होगी। इनके लिए एलेक्सा, रोबोट तथा एआई आधारित शिक्षा सामान्य अनुभव होंगे।

इसी कारण इस पीढ़ी का समाजीकरण पहले की किसी भी पीढ़ी से अलग होगा। बच्चे केवल परिवार और विद्यालय से ही नहीं, बल्कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित उपकरणों से भी सीखेंगे।

5. प्रारंभिक समाजीकरण : एक प्रत्यक्ष अवलोकन

इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण आधार लेखक द्वारा अपने एक वर्षीय पौत्र का प्रत्यक्ष अवलोकन है। यद्यपि वह अभी स्पष्ट रूप से बोल नहीं पाता, फिर भी मोबाइल फोन, लैपटॉप और टेलीविजन की स्क्रीन को आसानी से पहचान लेता है। जब उसके माता-पिता लैपटॉप पर कार्य करते हैं, तो वह उत्सुकतापूर्वक स्क्रीन की ओर देखता है और उसे छूने का प्रयास करता है।

सबसे रोचक बात यह है कि वह घर में लगे एलेक्सा (Alexa) की ओर विशेष रूप से आकर्षित होता है। जैसे ही एलेक्सा पर गाने बजते हैं, वह तुरंत उसकी ओर देखने लगता है, मुस्कुराता है और संगीत सुनने का आनंद लेता है। संगीत बंद होने पर वह एलेक्सा की ओर देखता है और उसे फिर से चलाने की इच्छा व्यक्त करता है। शोध यह भी दर्शाते हैं कि छोटे बच्चे प्रायः स्मार्ट स्पीकर जैसे उपकरणों के साथ सामाजिक-भावनात्मक ढंग से जुड़ जाते हैं और कई बार इन्हें परिवार के सदस्य जैसा मानने लगते हैं (Wiederhold, 2018)।

यद्यपि वह अभी पूरा शब्द "एलेक्सा" नहीं बोल सकता, फिर भी अपनी समझ के अनुसार "सा... सा..." कहकर एलेक्सा को सक्रिय करने का प्रयास करता है। यह केवल बोलने का प्रयास नहीं है, बल्कि यह दर्शाता है कि उसने एलेक्सा की आवाज़, उसके कार्य और उससे मिलने वाले संगीत के बीच संबंध स्थापित करना शुरू कर दिया है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह अत्यंत महत्वपूर्ण संकेत है। इससे स्पष्ट होता है कि जेनरेशन-बीटा के बच्चों के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि उनके प्रारंभिक अनुभवों और सीखने का स्वाभाविक हिस्सा बन रही है।

पहले बच्चे पहले भाषा सीखते थे और बाद में तकनीक से परिचित होते थे, जबकि जेनरेशन-बीटा में भाषा, तकनीक और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से परिचय लगभग साथ-साथ हो रहा है। यह समाजीकरण की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का संकेत है।

6. परिवार और तकनीक

लेखक का परिवार आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़ा हुआ है। लेखक के बड़े पुत्र और बहू दोनों माइक्रोसॉफ्ट में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं। उनका कार्य सॉफ्टवेयर विकास, क्लाउड कंप्यूटिंग और आधुनिक डिजिटल तकनीकों से संबंधित है। लेखक के छोटे पुत्र सीनियर डेटा इंजीनियर हैं और डेटा प्रबंधन तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता से जुड़े कार्य करते हैं।

ऐसे तकनीकी वातावरण में लेखक का एक वर्षीय पौत्र स्वाभाविक रूप से आधुनिक डिजिटल उपकरणों के बीच बड़ा हो रहा है। वह अपने माता-पिता को प्रतिदिन लैपटॉप पर कार्य करते हुए देखता है तथा घर में एलेक्सा और अन्य स्मार्ट उपकरणों का नियमित उपयोग देखता है। इससे स्पष्ट होता है कि जेनरेशन-बीटा के बच्चों का समाजीकरण केवल परिवार के सदस्यों के माध्यम से नहीं, बल्कि तकनीकी वातावरण के माध्यम से भी हो रहा है।

फिर भी परिवार इस बात का ध्यान रखता है कि तकनीक का उपयोग संतुलित रूप से हो। बच्चे के साथ बातचीत, खेल, पारिवारिक स्नेह और मानवीय संपर्क को समान महत्व दिया जाता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि तकनीक और पारिवारिक संस्कार एक-दूसरे के पूरक हो सकते हैं।

7. भविष्य की संभावनाएँ

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए जेनरेशन-बीटा में निम्नलिखित परिवर्तन देखने को मिल सकते हैं—

- शिक्षा में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का व्यापक उपयोग होगा।
- प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता के अनुसार व्यक्तिगत शिक्षा उपलब्ध होगी।
- एआई शिक्षक, सहायक और सीखने के साथी के रूप में कार्य करेगा।
- रोबोट और स्मार्ट मशीनें दैनिक जीवन का सामान्य हिस्सा बन जाएँगी।
- डिजिटल और वास्तविक जीवन के बीच का अंतर कम होता जाएगा।
- नई पीढ़ी वैश्विक स्तर पर अधिक जुड़ी हुई होगी।

8. चुनौतियाँ

जेनरेशन-बीटा के सामने कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी होंगी—

- अत्यधिक स्क्रीन समय का प्रभाव — अनुसंधान बताते हैं कि अधिक स्क्रीन-उपयोग बाल्यावस्था में भाषा-विकास को प्रभावित कर सकता है (Madigan et al., 2020)।
- सामाजिक और भावनात्मक विकास में संभावित कमी।
- तकनीक पर अत्यधिक निर्भरता।
- वास्तविक मानवीय संबंधों में दूरी आने की संभावना।
- भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों और पारिवारिक परंपराओं को सुरक्षित रखने की आवश्यकता।

9. सुझाव

इन चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

- बच्चों के स्क्रीन समय को संतुलित रखा जाए — अमेरिकन एकेडमी ऑफ पीडियाट्रिक्स की नवीनतम नीति के अनुसार 18 माह से कम आयु के शिशुओं को वीडियो-चैट को छोड़कर स्क्रीन से दूर रखना उचित है, तथा गुणवत्तापूर्ण संवाद व संदर्भ को समय-सीमा से अधिक महत्व दिया जाना चाहिए (AAP Council on Communications and Media, 2026)।
- परिवार के साथ प्रतिदिन पर्याप्त समय बिताया जाए।
- खेल, पुस्तकें, प्रकृति और रचनात्मक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।
- एआई का उपयोग शिक्षा के सहायक के रूप में किया जाए, शिक्षक के विकल्प के रूप में नहीं।
- बच्चों में नैतिकता, अनुशासन, संवेदनशीलता तथा भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का विकास किया जाए।

10. निष्कर्ष

जेनरेशन-बीटा मानव इतिहास की पहली ऐसी पीढ़ी होगी जिसका समाजीकरण जन्म से ही कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल तकनीक के वातावरण में होगा। लेखक के एक वर्षीय पौत्र का प्रत्यक्ष अवलोकन इस परिवर्तन की स्पष्ट झलक प्रस्तुत करता है। मोबाइल, लैपटॉप, टेलीविजन तथा विशेष रूप से एलेक्सा के प्रति उसका आकर्षण यह दर्शाता है कि आने वाली पीढ़ी तकनीक को केवल उपयोग की वस्तु नहीं, बल्कि अपने दैनिक जीवन के स्वाभाविक साथी के रूप में स्वीकार करेगी।

एलेक्सा पर गाने सुनना, उसके बंद हो जाने पर "सा... सा..." कहकर उसे दोबारा चलाने का प्रयास करना तथा डिजिटल उपकरणों को कम आयु में पहचान लेना इस बात का संकेत है कि जेनरेशन-बीटा का प्रारंभिक समाजीकरण एआई आधारित वातावरण में हो रहा है।

यदि परिवार, विद्यालय और समाज तकनीक के साथ-साथ मानवीय संवेदनाओं, सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक मूल्यों और भारतीय संस्कृति को भी समान महत्व दें, तो जेनरेशन-बीटा तकनीकी रूप से दक्ष होने के साथ-साथ संवेदनशील, जिम्मेदार और संतुलित नागरिकों की पीढ़ी बन सकती है।

संदर्भ नोट (Author's Note)

यह अध्ययन जेनरेशन-बीटा की वर्तमान प्रारंभिक अवस्था में लेखक द्वारा किए गए प्रत्यक्ष अवलोकन, पारिवारिक अनुभवों तथा वर्तमान सामाजिक एवं तकनीकी परिस्थितियों के विश्लेषण पर आधारित है। चूँकि यह पीढ़ी अभी विकास के प्रारंभिक चरण में है, इसलिए भविष्य में दीर्घकालिक समाजशास्त्रीय शोध इस विषय को और अधिक प्रमाणिक रूप से स्पष्ट करेंगे।

शोध-नैतिकता एवं घोषणाएँ (Ethics and Declarations)

सहमति (Consent): अध्ययन में उल्लिखित बालक के अवलोकन-संबंधी विवरण परिवार की स्वीकृति से, केवल शैक्षणिक उद्देश्य हेतु, गोपनीयता की रक्षा करते हुए प्रस्तुत किए गए हैं। बालक की पहचान उजागर करने वाली कोई सामग्री सम्मिलित नहीं की गई है।

सीमाएँ (Limitations): यह अध्ययन एकल-प्रकरण (single-case) प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित गुणात्मक शोध है; अतः इसके निष्कर्षों का सामान्यीकरण सीमित है। भविष्य में बड़े प्रतिदर्श पर आधारित तुलनात्मक एवं मात्रात्मक अध्ययनों की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची (References)

[1]. American *Academy* of Pediatrics, Council on Communications and Media. (2026). Digital ecosystems, children, and adolescents: Policy statement. Pediatrics, 157(2), Article e2025075320. https://doi.org/10.1542/peds.2025-075320

[2]. Madigan, S., McArthur, B. A., Anhorn, C., Eirich, R., & Christakis, D. A. (2020). Associations between screen use and child language skills: A systematic review and meta-analysis. JAMA Pediatrics, 174(7), 665–675. https://doi.org/10.1001/jamapediatrics.2020.0327

[3]. Mannheim, K. (1952). The problem of generations. In P. Kecskemeti (Ed.), Essays on the sociology of knowledge (pp. 276–320). Routledge & Kegan Paul. (Original work published 1928)

[4]. McCrindle, M. (2025). Welcome Gen Beta: Generation Beta defined (born 2025–2039). McCrindle Research. https://mccrindle.com.au/article/generation-beta-defined/

[5]. Pilcher, J. (1994). Mannheim's sociology of generations: An undervalued legacy. The British Journal of Sociology, 45(3), 481–495. https://doi.org/10.2307/591659

[6]. Prensky, M. (2001). Digital natives, digital immigrants, Part 1. On the Horizon, 9(5), 1–6. https://doi.org/10.1108/10748120110424816

[7]. Wiederhold, B. K. (2018). "Alexa, are you my mom?" The role of artificial intelligence in child development. Cyberpsychology, Behavior, and Social Networking, 21(8), 471–472. https://doi.org/10.1089/cyber.2018.29119.

Cite this Article:

अखिलेश सिंह. (2026). जेनरेशन-बीटा: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. International Journal of Emerging Research in Arts, Science and Technology, 1(4), 12–15.

Journal URL: *https://ijerast.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.67715/ijerast.v1i4.21*

Disclaimer/Publisher's Note*: The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.*